अध्याय तृतीय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

अध्याय-तृतीय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.1 परिचय :

अनुसंधान का अर्थ किसी नवीन तथ्यों की खोज करना है। वास्तव में अनुसंधान एक ऐसी विशिष्ट प्रक्रिया है, जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता है। अनुसंधान प्रश्न करना, जांच गहन निरीक्षण, योजनाबद्ध अध्ययन, व्यापक परीक्षण और तत्परता युक्त उद्देश्य, सामान्यीकरण प्रक्रिया संनिध्यि होती है। पी.वी.यंग के शब्दो में –

''अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है जिनके द्वारा नवीन तथ्यों की खोज तथा प्राचीन तथ्यों की पुष्टी की जाती है तथा उनके उन अनुक्रमों, पारस्परिक समबन्धों, कारणात्मक व्याख्याओं तथा प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करती है, जो कि प्राप्त तथ्यों को निर्धारित करते है।''

(कपिल, 1980 पेज 24)

3.2 शोध प्रविधि :

किसी भी शोध कार्य में यह सम्भव नहीं हो पाता है कि सभी लक्षगत समष्टि को अध्ययन में शामिल किया जाए। अतः समष्टि की समस्त इकाईयों में से अध्ययन हेतु कुछ इकाईयों को कुछ निश्चित विधि द्वारा चुन लिया जाता है। उन संकलित इकाईयों के समूह को न्यादर्श कहते है। इस न्यादर्श के आधार पर ही अध्ययनगत निष्कर्ष घटित होते है :

''प्रतिदर्श या न्यादर्श एक समष्टि का वह अंश होता है, जिसमें अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिबिम्ब रहता है।''

(कपिल 1980 पेज नं. 77)

प्रस्तुत शोध हेतु प्रदत्त संकलन का विवरण निम्नलिखित है :

3.3 न्यादर्श का चयन :

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु न्यादर्श का चयन महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले के 5 ग्रामीण तथा 5 शहरी भाग के विद्यालय लिये गये है।

शोध के न्यादर्श की विशेषताऐं निम्नलिखित है :–

1. इस शोधकार्य के अन्तर्गत दस विद्यालयों से कुल 200 विद्यार्थियों को चयनित किया गया।
2. न्यादर्श के रूप में कक्षा 6 के विद्यार्थियों को चुना गया। जिसमें 100 बालक तथा 100 बालिकाऐं थी।

तालिका क्रमांक 3.4 प्रतिदर्श का विवरण

क्र.	शाला का नाम	अवस्थिति	परीक्षण में सम्मिलित होने वाले छात्रों की संख्या
1.	अम्बेडकर विद्यालय, वर्धा,	शहरी	20
2.	शिवाजी विद्यालय, वर्धा,	शहरी	20
3.	न्यू इंग्लिश स्कूल, वर्धा,	शहरी	20
4.	लोक विद्यालय, वर्धा,	शहरी	20
5.	महात्मा गांधी विद्यालय, वर्धा,	शहरी	20
6.	आनंदराव मेघे विद्यालय, बोरगांव (में)	ग्रामीण	20
7.	विकास विद्यालय, सिंदी (मेघे)	ग्रामीण	20
8.	मॉडल विद्यालय, धनोडी	ग्रामीण	20
9.	आदर्श विद्यालय, आंजी.	ग्रामीण	20
10.	स्वावलंबी विद्यालय, खरांगणा	ग्रामीण	20
		योग	**200**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 5 ग्रामीण तथा 5 शहरी शालाओं से कुल 200 विद्यार्थी परीक्षण में सम्मिलित हुए।

किसी समस्या के चयन के उपरान्त शोधकार्य को करने के लिए उपकरणों की नितांत आवश्यकता होती है इसलिए यह आवश्यक है कि शोधकार्य के लिए उचित उपकरणों का प्रयोग किया जाए।

प्रस्तुत शोधकार्य के लिए शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित उपप्रकरण प्रयोग किया गया –

"हिन्दी भाषा उपलब्धि परीक्षण"

3.5 उपकरण का निर्माण :

किसी भी शोधकार्य हेतु आंकड़े एकत्र करने के लिए उचित उपकरण का चयन अति महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वयं हिन्दी भाषा उपलब्धि परीक्षण का निर्माण किया गया। परीक्षण के निर्माण के बाद सर्वप्रथम कक्षा 6 के हिन्दी पढ़ाने वाले शिक्षकों से प्रश्नों की जांच करायी गई तथा उनकी सलाह के अनुसार सुधार किया गया।

परीक्षण में कुल अंक 60 निर्धारित किये गये। परीक्षण पत्र का विवरण निम्नलिखित है –

इस परीक्षण पत्र में कुल 60 अंक है तथा प्रश्नों की संख्या 11 हैं।

1. शब्दज्ञान :

इस परीक्षण में चार प्रकार के प्रश्न शामिल किये गये है जो परीक्षण पत्र में 1 के क्रम में है। इनके द्वारा विद्यार्थियों के शब्दज्ञान के कौशल का परीक्षण किया गया।

1. **समानार्थी शब्द :** निर्धारित अंक –5 इसके अंतर्गत पांच शब्दों के एक–एक समानार्थी शब्द कोष्टक में से छांटकर लिखने थे। प्रत्येक सही उत्तर का एक अंक रखा गया।

2. **विरोधी शब्द :** निर्धारित अंक–5 इसके अंतर्गत पांच शब्द के विरोधी शब्द परीक्षण पत्र में दिये गये थे, जिन्हें रेखा खींचकर जोड़ना था। प्रत्येक सही रेखा जोड़ने पर एक अंक रखा गया।

3. **अशुद्ध शब्द :** निर्धारित अंक–5 इसके अंतर्गत पांच अशुद्ध शब्द दिये गये, जिन्हें शुद्ध करके लिखना था। प्रत्येक शब्द के शुद्ध रूप लिखने पर एक अंक रखा गया।

4. **शब्द समूह के लिए एक शब्द :** निर्धारिक अंक–5 इसके अन्तर्गत पांच वाक्य दिये गये। जिसे किसी एक ही शब्द में बांधना था जो उस वाक्य से संबंधित हो। सही शब्द लिखने पर एक अंक रखा गया।

2. वाक्य रचना :

इस परीक्षण में 2 प्रकार के प्रश्न शामिल किये गये, जो परीक्षण पत्र में क्रम में है। इनके द्वारा छात्र के वाक्यरचना के कौशल का परीक्षण किया गया।

1. **शब्द से वाक्य बनाना :** निर्धारित अंक–5 इसके अंतर्गत पांच शब्द किये गये, प्रत्येक शब्द से एक एक वाक्य बनाना है। सही वाक्य बनाने पर एक अंक दिया गया।

2. **मुहावरों का वाक्य में प्रयोग :** निर्धारित अंक–5 इसके अन्तर्गत 5 मुहावरे दिये गये जिनके अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करना था। अर्थ के लिए 1/2 अंक तथा वाक्य में प्रयोग के लिए 1 अंक रखे गये। सही अर्थ लिखने पर 1 अंक तथा उनका सही वाक्य प्रयोग करने पर 1 अंक रखा गया।

3. **व्याकरण :**

इस परीक्षण के अंतर्गत बोल–चाल के दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त होने वाले व्यावहारिक व्याकरण को रखा गया, जो परीक्षण पत्र क्रमांक 4, 8 में है।

1. **बहुवचन :** निर्धारित अंक–5 इसके अंतर्गत पांच शब्द दिये गए। जिनका बहुवचन करना था। प्रत्येक शब्द का बहुवचन सही करने पर 1 अंक रखा गया।

2. **स्त्रीलिंग :** निर्धारित अंक–5 इसके अंतर्गत पांच स्त्रीलिंग शब्द दिये गये, जिन्हें पुल्लिंग में बदलना था। प्रत्येक शब्द का सही पुल्लिंग करने पर 1 अंक रखा गया।

4. **लेखन :**

इस कौशल का परीक्षण अनुवाद लेखन तथा निबंध लेखन के माध्यम से किया गया। जो परीक्षण पत्र क्रमांक 10 तथा 11 में है।

1. **अनुवाद लेखन :** निर्धारित अंक–5 इसके अंतर्गत एक मराठी गद्यांश का सही शब्दों तथा व्याकरण एवं वाक्यों को ध्यान में रखकर हिन्दी करना था। इस प्रश्न पर 5 अंक निर्धारित किये गये।

2. **निबंध लेखन :** निर्धारित अंक–10 इसके अंतर्गत (दीपावली) निबंध दिया गया। इसमें भी शब्द प्रयोग, वाक्य रचना, महत्व, व्याकरण एवं स्पष्ट लेखन को ध्यान में रखकर 10 अंक निर्धारित किये गये।

3.6 प्रदत्तों का संकलन :

उपकरण के निर्माण के पश्चात सम्बन्धित विषय शिक्षकों से जांच करवाई गई और उनमें आवश्यक सुधार किया गया। तद पश्चात शोधकर्ता ने प्रत्येक (10) विद्यालयों में जाकर प्राचार्य से परीक्षा लेने की अनुमति ली।

परीक्षण शुरू करने से पहले निम्नलिखित निर्देश दिये गये :

1. आप सभी अपनी–अपनी जगह पर बैठक जाइये। आपको दिया गया हिन्दी भाषा उपलब्धि परीक्षण पूरा पढ़ ले।

2. जब तक कार्य शुरू करने को ना कहा जाऐ, कार्य शुरू ना करें।

3. दिये गये परीक्षण पत्र में स्वयं का नाम, विद्यालय का नाम, लिंग–लड़का / लड़की आदि प्रविष्ठियां पहले लिखने को कहा गया।

4. अपना कार्य स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखे। एक दूसरे की नकल तथा बातचीत करना मना है।

5. प्रत्येक प्रश्न को हल करने से पहले उदाहरण को समझे बाद में उत्तर लिखे। आपको उत्तर प्रश्न पत्र के अंदर लिखने है।

शोधकर्ता ने स्वंय निरीक्षण करते हुए परीक्षण का कार्य सम्पन्न किया।

अंत में सभी परीक्षण पत्र की ध्यानपूर्वक जांच करके स्कोरिंग किया गया।

3.7 प्रयुक्त सांख्यिकी :

प्राप्त आंकड़ों का मध्यमान, मानक विचलन और 'टी' टेस्ट द्वारा विश्लेषण किया गया।